❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

प्रबुधे न पुनस्कृधिः।।

यजु. 4/14

हे संकल्पशक्ति! हमें फिर से प्रबुद्ध कर जगा।

O Will power ! Do awaken us again from stumber.

वर्ष 40, अंक 37 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 10 जुलाई, 2017 से रविवार 16 जुलाई, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अमरनाथ यात्रियों पर हमले की आर्यसमाज द्वारा कड़ी निन्दा : देश को कड़ी कार्यवाही की अपेक्षा

आखिर सीधी कार्यवाही कब??

अमरनाथ यात्रियों पर हुआ हमला मन को व्यथित और विचलित करने वाला है। कश्मीर के अनंतनाग जिले में अमरनाथ यात्रियों पर हुए एक आतंकी हमले में एक बार फिर कई लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा और कम से कम 19 अन्य लोग घायल हुए हैं। हमले में चरमपंथियों का निशाना बनी बस में कुल 56 यात्री सवार थे जिनमें से ज्यादातर यात्री गुजरात के थे। कुछ यात्री महाराष्ट्र के भी थे। सरकार के बड़े मंत्रियों से लेकर नेताओं तक ने इस घटना की कड़ी निंदा की है पर प्रश्न यह है कि कब तक निन्दा रूपी शब्द से काम चलेगा। इस आतंक के खिलाफ सीधी कार्यवाही कब होगी? निन्दा किसी मसले का हल नहीं है क्योंकि अगस्त, 2000 में आतंकियों द्वारा पहलगाम के बेस कैंप पर हमला किया था। बेस कैंप में 32 लोग मारे गए थे। तब भी हमने सिर्फ निन्दा की थी यदि उस समय सीधी कार्यवाही की होती तो अगले वर्ष जुलाई, 2001 को अमरनाथ गुफा के रास्ते की सबसे ऊंचाई पर स्थित पड़ाव शेषनाग पर 13 लोगों की आतंकियों द्वारा हत्या नहीं होती! लेकिन फिर भी हमने निन्दा ही की यदि सीधी कार्यवाही की होती तो अगले वर्ष अगस्त, 2002 में चरमपंथी पहलगाम में हमला करने की हिमाकत नहीं करते, जिसमें नौ लोगों की मौत हुई थी और 30 अन्य लोग घायल हो गए थे।

पिछले साल 9 जुलाई को हिजबुल का आतंकी बुरहान वानी भारतीय सेना के हाथों मार गिराया गया था। जिसके बाद उम्मीद की जा रही कि सुलगते चिनार और रक्त से लाल हुई बर्फ की चादर अपने पुराने रंगों में लौट आयेंगे लेकिन आज हालत ये हैं कि मीर वाइज जैसे नेता लगातार अपनी रैलियों में इस बात का ऐलान कर रहे हैं कि वही कश्मीरियों के दर्द को समझते हैं और उनके हिमायती हैं और अगर लोगों ने उनका साथ दिया तो वे एक दिन कश्मीर को आजादी दिला देंगे। मीर वाइज जैसे नेता कश्मीर को आजादी दिलाकर कहां ले जाएंगे? मजहबी मानसिकता के कारण कश्मीर जैसा खूबसूरत राज्य अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है, बढ़ता आतंकवाद और

– *शेष पृष्ठ 7 पर*

....जिन्ना ने पाकिस्तान मांगते हुए कहा था कि हिन्दू मेरी इबादत में खलल डालेगा इसलिए मुझे पाकिस्तान चाहिए। क्या हुआ आज उसकी इबादत का? पाकिस्तान का बच्चा-बच्चा या कहो 20 करोड़ की आबादी संगीनों के साये में अपनी इबादत करते नजर आते हैं जबकि भारत में रह रहे मुस्लिम सड़कों तक पर आराम से सुरक्षित नमाज अदा करते दिख जायेंगे। लेकिन यहाँ का बहुसंख्यक समुदाय अपनी आस्था उपासना के लिए सरकार का मुंह देख रहा कि कब सुरक्षा का आश्वासन मिले और बिना विघ्न अपनी पूजा अर्चना कर पाएं। ....

आर्यसमाज ने कड़ी कार्यवाही के लिए लिखा प्रधानमन्त्री को पत्र

आर्यसमाजों की सर्वाच्च संस्था सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रधानन्त्री श्री नेरन्द्र मोदी जी को पत्र लिखकर अमरनाथ यात्रियों पर हुए आतंकवादी हमलों की निन्दा करते हुए कड़ी और सीधी कार्यवाही करने आह्वान किया है। पत्र में कहा गया है कि यदि समय रहते आतंकवाद का निर्मूलन नही किया गया तो इसे भारत की कमजोरी समझा जाएगा जो भारत की प्रभुसत्ता के लिए नया खतरा हो सकता है। उन्होंने कहा कि वेद वाक्य है – **'सद्रक्षणाय खलनिग्रहणाय'** अर्थात **सज्जनों की रक्षा और दुर्जन, आततायियों, आतंकवादियों का विनाश करना ही राजधर्म है।**

ज्ञातव्य है कि आर्यसमाज ने अपनी स्थापना से राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने तथा इसे अखण्ड और अक्षुण्ण बनाने का कार्य किया है। आर्यसमाज आज भी राष्ट्रोन्नति के प्रत्येक कार्य में सदैव भारत सरकार के साथ है। अतः आतंकवाद का सीधे मुकाबला किया जाए और उसे समाप्त करने तक सीधी कार्यवाही की जानी चाहिए।

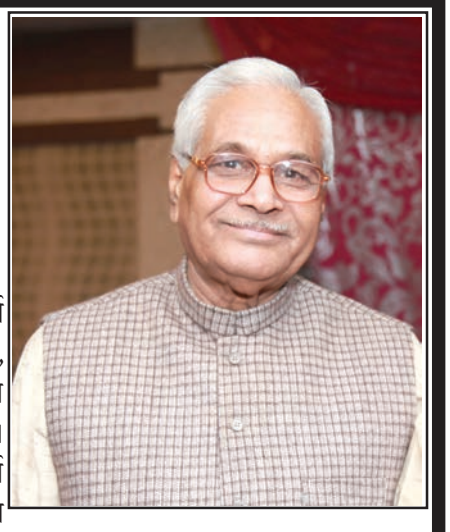

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. धर्मपाल जी का निधन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल एवं दिल्ली सभा के प्रधान ने किया शोक व्यक्त

दिल्ली की प्रतिष्ठित आर्यसमाज बी.एन. पूर्वी शालीमार बाग के संस्थापक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं अन्य अनेक संस्थाओं को अपना नेतृत्व प्रदान करने वाले, साप्ताहिक आर्यसन्देश के प्रधान सम्पादक रहे डॉ. धर्मपाल आर्य जी का दिनांक 9 जुलाई की प्रातः निधन हो गया। वे लगभग 76 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार पंजाबी बाग शमशान घाट पर किया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार, सभा प्रधान धर्मपाल आर्य, पूर्व महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली एवं अन्य अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं आर्यजनों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। वे अत्यन्त मृदुभाषी, लेखक, कुशल वक्ता एवं संगठन को नेतृत्व प्रदान करने की अद्भुत कला के धनी थे। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 16 जुलाई, 2017 को सायं 4-5 बजे तक वार्ष्णेय धर्मशाला, निकट डी.ए.वी. स्कूल शालीमार बाग, दिल्ली-88 में आयोजित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।

– विनय आर्य, महामन्त्री

वेद-स्वाध्याय

सच्चा आनन्द

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।
तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः।। ऋ. 10/34/13
ऋषिः **कवष ऐलूषः, अक्षो वा मौजवान्।।** देवता - **कृषिप्रशंसा।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - अक्षैः मा दीव्यः = तू कभी जुआ मत खेल, किन्तु **कृषिं इत् कृषस्व** = खेती ही का काम परिश्रमपूर्वक कर **वित्ते बहु मन्यमानः**= परिश्रम से मिले धन को ही बहुत मानता हुआ उसी में **रमस्व** =आनन्दित, प्रसन्न और सन्तुष्ट रह। **कितव** = हे जुआ खेलने वाले! **तत्र** = इसी परिश्रम की कमाई में ही **गावः** = गौ आदि सब सच्ची सम्पत्ति है और **तत्र जाया** = इसी में सब गृहस्थ- सुख हैं। **तत्** = यह बात **अर्यः अयं सविता** = मेरे स्वामी इस प्रेरक प्रभु ने मे = मुझे **वि चष्टे** = अच्छी तरह दिखला दी है।

विनय - बिना परिश्रम किये फल चाहने वाले भाइयो! बिना पसीना बहाये सुख-सम्पत्ति के अभिलाषियो! तुम बड़े भारी भ्रम में हो। तुम्हारी यह इच्छा इस जगत् के महान् सिद्धान्त के विपरीत है। इस जगत् के स्वामी, सर्वान्तर्यामी, प्रेरक प्रभु ने यह बात आज मुझे साफ-साफ़ दिखला दी है, मेरे अन्तःकरण में इसका प्रकाश हो गया है। पहले मैंने भी सुख पा लेने के बहुत से छोटे रास्ते (Short cuts) ढूंढे, परन्तु आज प्रभु-कृपा से मुझे साक्षात् हो गया है कि बिना स्वयं परिश्रम किये कोई सच्चा सुख नहीं मिल सकता। यह अटल नियम है। इसलिए आज मैं ऊंचे स्थान पर खड़ा होकर सब संसार को कहना चाहता हूं, मनुष्यमात्र को सुना देना चाहता हूं-"हे मनुष्य! तू जुआ मत खेल, खेती कर। आज संसार के मनुष्य नाना प्रकार से जुआ खेल रहे हैं, भिन्न-भिन्न जातियों ने अपने-अपने ढंग-सभ्य या असभ्य-निकाल रखे हैं, पर इन सब ढंगों में दो मूलभूत बात रहती हैं, अर्थात् (1) बिना श्रम किये समृद्धि पाने का लोभ और (2) इसके लिए अपने-आपको भाग्य की अनिश्चित, संशयित सम्भावना पर छोड़ देना। इस लोभ और आलस्य में फंसकर मनुष्य जुए के पाप में पड़ता है, पर लोभ और आलस्य के कारण वैयक्तिक ही नहीं, किन्तु सामाजिक सम्पत्ति का भी ह्रास होता है तथा कौटुम्बिक जीवन (जोकि मनुष्य के विकास का साधन है) का नाश होता है। मनुष्यो! तुम्हें सम्पत्ति का सुख (जिसका कि उपलक्षण 'गावः' है) और कौटुम्बिक सुख (जिसका कि उपलक्षण 'जाया' है) इस कृषि से ही मिलेगा, जुए से नहीं, कुछ श्रम करके कमाने से मिलेगा, दूसरे को ठगने द्वारा मिले धन से नहीं। इसलिए ऐसी थोड़ी कमाई को ही तू बहुत समझ। ईमानदारी और परिश्रम से ही कमाया हुआ थोड़ा-सा धन भी बहुत है, वह वास्तव में बहुत अधिक है। किसी प्रकार के भी जुढ(द्यूत) से रहित सच्ची कमाई का एक-एक पैसा एक-एक हीरे के बराबर है, उतना ही सुख देने वाला है। इसलिए, हे प्यारे! तू अपनी शुद्ध कमाई की रूखी-सूखी में अमृत का आनन्द ले और अपनी शुद्ध कमाई के दो पैसों पर ही बादशाह को मात करने वाले गर्व के साथ सच्चा आनन्द लूट।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

माँ, माटी और मौलवी

.....पाकिस्तान में ईशनिंदा के नाम पर कितनों को मार दिया और यहां चूंकि आपका बस नहीं चल रहा है तो आप दुकानें जला कर काम चला रहे हैं यह बीमारी बहुत ही गहरी है और यह बीमारी बढ़ती ही जा रही है। इसलिए क्योंकि सारी दुनिया ने इसे स्वीकार कर लिया। तुम आक्रामक बने रहे और लोग इसे स्वीकार करते रहे। यह मजहब है कि सारी दुनिया आपसे डरे?.....

गाय के नाम पर भीड़ द्वारा हुई कुछ हिंसात्मक घटनाओं को लेकर जन्तर-मंतर पर गले में तख्ती लटकाए विरोध प्रदर्शन कई दिन पहले सबने देखा था। इसे लिंचिज का नाम दिया था हर किसी की तख्ती पर लिखा था "नॉट इज माय नेम" ये सब वह लोग थे जो दादरी में अखलाक, हरियाणा में जुनेद की मौत से दुखी थे। ये लोग बार-बार नारा लगा रहे थे कि धर्म और गाय के नाम पर अल्पसंख्यक समुदाय यानि मुस्लिमों के खिलाफ हिंसा की जा रही है। असल में नेता और मीडिया जिसे साम्प्रदायिक हिंसा कहती है, अब बंगाल उसकी चपेट में है। कई दिन से 24 परगना के बशीरहाट में किसी एक फेसबुक पोस्ट से क्रुद्ध मुसलमान उपद्रव और हिंसा में लिप्त हैं। यह हिंसा इतनी ज्यादा है कि स्कूल और दुकानें बंद हैं और सुरक्षा बल लगातार गश्त लगा रहे हैं। हिंसा में दुकानों को जलाया और बर्बाद किया गया है जो ज्यादातर हिन्दुओं की हैं।

जलती दुकान, जलते मकान, बेघर सुबकते लोग मन में सवाल लिए जरूर घूम रहे होंगे कि क्या बंगाल में हिन्दू होना गुनाह है? ममता बनर्जी जब सत्ता में आई तब उनका नारा था माँ, माटी और मानुष लेकिन जिस तरह उनके वर्तमान कार्यकाल में वर्ग विशेष द्वारा हिंसा हो रही है उसे देखकर कोई भी आसानी से कह देगा कि राज्य में उनका नारा 'माँ, माटी और मौलवी' ही बनकर रह गया। अब तक राज्य की खबरों से मालूम होता है कि उपद्रवी मुसलमानों की भीड़ ही हमलावर रही है, हिन्दू इसमें शरीक नहीं हुए हैं। इस कारण इसे दंगे के बजाय सिर्फ मुस्लिम हिंसा का नाम देना भी गलत नहीं होगा। फेसबुक पर पोस्ट डालने वाला लड़का गिरफ्तार हो गया। फिर भी हिंसा हुई। यह भी कहा जा रहा है कि गिरफ्तारी से मुसलमानों की आहत भावना संतुष्ट नहीं हुई है तो इसमें सवाल पैदा होते हैं आखिर वे चाहते क्या थे? क्या उस लड़के को उसी वक्त सजा दी जानी चाहिए थी और क्या वह सजा भीड़ देती? लेकिन क्या उसके ऐसा करने से हिंसा न होती? मालदा, धुलागढ़ और अब बशीरहाट बंगाल का मुस्लिम क्या यही चाहता है कि हर चीज सड़क पर निबटाई जाये?

ऐसा इसलिए नहीं है कि इस राज्य में सांप्रदायिक तनाव की स्थिति कभी बनती ही नहीं बल्कि इसलिए कि उनकी खबरें कभी बाहर ही नहीं आती थीं। कम से कम पिछले एक हफ्ते तक तो यही सूरत थी। बंगाल में मुसलमान दूसरे राज्यों के मुकाबले ज्यादा तादाद में हैं। राजनीतिक दलों में भी वे दिखलाई पड़ते हैं। स्थानीय स्तर पर भी वे दब कर नहीं रहते बल्कि चढ़कर रहते है। पिछले साल मालदा में भी इसी तरह पैगम्बर मोहम्मद और मजहब के अपमान से गुस्साए मुसलमानों ने सरकारी संपत्ति को भारी नुकसान पहुँचाया था। सड़क पर गाड़ियों को आग लगाते मुसलमानों की तस्वीरें खूब घूमती रहीं इससे यह लोग क्या साबित करना चाहते हैं सिर्फ यही कि मुसलमानों को मौका दो और देखो? बशीरहाट में मुसलमान बहुसंख्या में हैं। वहां प्रशासन मौन बना रहा मीडिया की माने तो पूरे प्रकरण में जिस तरह वहां राज्य सरकार खामोश रही इसे देखकर भी लोग अपनी-अपनी सुविधानुसार अंदाजा लगा सकते हैं।

सरकारी शुतुरमुर्गी प्रवृत्ति वोट के लालच में सरकार को देखने नहीं देती कि यह बीमारी उसके भीतर मौजूद है। लेकिन यहाँ तो बंगाल के सबसे प्रभावशाली समाचार समूह ने भी इस हिंसा की खबर नहीं बनने दी। धूलागढ़ हिंसा की खबर को भी इसी तरह दबाने की कोशिश हुई थी। हालाँकि इस बार खबरें बाहर आ रही हैं। हद से कुछ सेकुलरवाद से प्रभावित नेता इस घटना की निंदा करने के बजाय उल्टा केंद्र सरकार पर आरोप लगा रहे हैं कि अल्पसंख्यकों के खिलाफ काम कर रहे हैं। पर इसमें भी जो मुद्दे उठा रहे हैं, वह धर्म को लेकर ही हैं। यह अफसोस की बात है कि2017 में भी आकर इस्लाम को महमूद गजनवी के चश्मे से और तैमूर की आंखों से ही देखा जा रहा है जोकि इतिहास का एक हिस्सा भर थे। जब थे, तब थे, जहां थे, वहां थे अब किस बात का स्वांग?

इस मामले में मुस्लिम लेखक ताबिश सिद्दीकी ने लिखा है कि अगर आप मुसलमान हैं और आपको मेरी बात बुरी लग रही है तो जान लीजिये कि आप पूरी तरह से अरबी दादागिरी की गिरफ्त में हैं। ये सब धर्म नहीं है। ये राजनीति है और शुद्ध राजनीति। अरबों का इस्लाम, धर्म नहीं है. मस्जिदों में इस्राईल को बद्दुआ देना मजहब नहीं है। ग्यारह साल के बच्चे को एक कार्टून के लिए दोष देना और उस वजह से पचासों लोगों की दुकानें जला देना मजहब नहीं है। ये राजनैतिक दादागिरी है और आपके धर्म का ढांचा कुछ नहीं अब सिर्फ राजनीति है। बस गड़बड़ यह हुई कि आपकी इस दादागिरी को लोगों ने अब तक सहा है तो आपको यह अपने धर्म का हिस्सा लगने लगा है।

वह आगे लिखते हैं कि इसे मजहब कहते हैं आप? शर्म नहीं आती है आपको खुद को मुसलमान कहते हुए? बांग्लादेश में आपने कितने ब्लागर बच्चों को मार दिया, पाकिस्तान में ईशनिंदा के नाम पर कितनो को मार दिया और यहां चूंकि आपका बस नहीं चल रहा है तो आप दुकानें जला कर काम चला रहे हैं यह बीमारी बहुत ही गहरी है और ये बीमारी बढ़ती ही जा रही है। इसलिए क्योंकि सारी दुनिया ने इसे स्वीकार कर लिया। तुम आक्रामक बने रहे और लोग इसे स्वीकार करते रहे। यह मजहब है कि सारी दुनिया आपसे डरे? यह मजहब है कि वहां लोग चैन से न जी पायें जहां आप बहुसंख्यक हो जाएं? इस खूंखार मानसिकता को मजहब कहते हुए आपकी जबान नहीं जलती है? दादागिरी और मजहब में फर्क समझिये। जल्दी समझिये क्योंकि दुनिया का भरोसा और सब्र अब टूट रहा है। *-सम्पादकीय*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ऋ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गुरुकुल पौंधा देहरादून में सम्पन्न ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्वाध्याय शिविर में प्रस्तुत व्याख्यानों पर आधारित लेख

तप वह साधन है जिससे मनुष्य का जीवन चमक उठता है - डॉ. सोमदेव शास्त्री

शिविराध्यक्ष एवं व्याख्याता डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने कहा कि हमें ईश्वर की हर प्रकार से स्तुति करनी चाहिए। जो हमने ग्रन्थों में पढ़ा है, उसकी बार-बार आवृत्ति करनी चाहिए। संसार में ब्रह्म से बड़ा और कोई तत्व नहीं हो सकता। वह सारे संसार को बनाने वाला है। उस परमात्मा को जानकर और उसका निश्चय करके उसे जीवन में सबको धारण करना चाहिये। आचार्य जी ने कहा कि सब तरफ से अपने मन को हटाके परमात्मा के स्वरूप में उसे स्थित करें। ईश्वर के गुणों को भी हम सबको धारण करना है। परमात्मा सत्य स्वरूप है। हमारे व्यवहार में सत्य होना चाहिये। ऋषि दयानन्द के सत्य के प्रति निष्ठा का उदाहरण देते हुए आचार्य जी ने उन्हीं के कहे शब्दों को स्मरण कराया जिसमें उन्होंने कहा था कि यदि उन्हें तोप के मुंह से बांधकर पूछा जाये तब भी उनके मुंह से सत्य ही निकलेगा। आचार्य जी ने कहा कि यह सत्य को धारण करने की स्थिति है। उन्होंने कहा कि गलत कामों को करने वाला ईश्वर का उपासक कदापि नहीं हो सकता। जो मनुष्य दिखाने के लिए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना कते हैं, उन्हें परमात्मा कभी प्राप्त नहीं होता। आचार्य जी ने लौकिक विषयों में मन की एकाग्रता का उदाहरण देते हुए क्रिकेट के खेल और प्रसिद्ध टी.वी. सीरियलों की चर्चा की। आचार्य जी ने कहा कि जब इन व ऐसे अनेक कार्यो में मन को एकाग्र किया जा सकता है तो ईश्वर की उपासना में मन को एकाग्र क्यों नहीं किया जा सकता? जिस मनुष्य का मन व अन्त:करण शुद्ध होता है, वही अपने मन को परमात्मा में लगा सकता है। आचार्य जी ने बताया कि ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का प्रकाशन एक पत्रिका की तरह मासिक अंकों में हुआ था। जो लोग महर्षि दयानन्द का वेद भाष्य क्रय करते थे उन्हें ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका लेना अनिवार्य होता था।

आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री, ने बताया कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अंक 13 व 14 में इसके ग्राहकों की एक सूची प्रकाशित हुई थी जिसमें प्रथम स्थान पर प्रोफेसर मैक्समूलर का नाम था। वेदों के अध्येता प्रो. विल्सन का नाम भी ग्राहक सूची में था। आचार्य जी ने कहा कि मैक्समूलर ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य को पढ़कर प्रभावित हुए थे। प्रो. मैक्समूलर भारत में नियुक्त होने वाले सिविल व पुलिस सर्विस के अधिकारियों को भारत आने से पहले लैक्चर दिया करते थे। उनके व्याख्यानों का वह संकलन 'हम भारत से क्या सीखें?' नाम से प्रकाशित हुआ है। इस पुस्तक में मैक्समूलर ने ऋषि दयानन्द और भारत देश की प्राचीन संस्कृति की प्रशंसा की है। आचार्य जी ने यह भी बताया कि प्रो. मैक्समूलर ऋषि दयानन्द की मृत्यु के बाद उनका जीवन चरित लिखना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने परोपकारिणी सभा से पत्रव्यवहार भी किया था। खेद है कि परोपकारिणी सभा व पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य समाज के उस समय के प्रमुख विद्वानों ने उन्हें उसका समुचित उत्तर नहीं दिया। आचार्य जी ने कहा कि यदि मैक्समूलर को ऋषि जीवन की जानकारी उपलब्ध कराई जाती और वह जीवन चरित्र लिख देते तो ऋषि दयानन्द और आर्य समाज का यूरोप में बहुत प्रचार होता।

आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि बिना ऋषि की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से उनका वेदभाष्य समझ में नहीं आता। आचार्य जी ने 28 नक्षत्रों, गृहों, उपग्रहों, पृथिवी के क्रान्तिवचृत आदि की विस्तार से चर्चा की और इसे सभी श्रोताओं को समझाया। आचार्य जी ने कहा कि सूर्य गतिशील है ओर 25 दिनों में एक चक्र पूरा करता है। सूर्य को वेदों में गृहपति कहा गया है। सूर्य ग्रह नहीं अपितु नक्षत्र है। आचार्य जी ने कहा कि पौराणिकों की 9 ग्रहों की कल्पना व पूजा कराना दोषपूर्ण है। उन्होंने कहा कि राहु और केतू भी ग्रह नहीं हैं अपितु वराह स्मृति के अनुसार यह छाया ग्रह हैं। आचार्य जी ने बताया कि सूर्य और पृथिवी के बीच की दूरी 9.30 करोड़ मील है। पृथिवी की दीर्घवृत्ताकार में गति व परिक्रमा करता है। आचार्य जी ने समुद्र मन्थन का उल्लेख किया, समुद्र मंथन में निकले अमृत का विष्णु द्वारा एक सुन्दर स्त्री मोहिनी का रूप धारण कर छल पूर्वक देवताओं में वितरण करने और देवताओं की चाल को एक राक्षस द्वारा समझकर देवताओं की पंक्तियों में आ बैठने और अमृत प्राप्तकर उसे पी लेने का वर्णन भी किया और कहा कि विष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र से उसका संहार करने तथा उसका सिर धड़ से अलग होने की पुराण वर्णित कथा पर प्रकाश डाला। पौराणिकों ने उस मृतक राक्षस के सिर कोराहू नाम दिया और उसके धड़ को केतु। अत: राहू केतु ग्रह नहीं हो सकते। वह तो राक्षस के ही शरीर की उपमायें हैं। इस प्रकार नव ग्रहों में से सूर्य व राहू-केतु के निकल जाने पर ग्रहों की संख्या घट कर 6 ही रह जाती है। अत: पौराणिकों द्वारा 9 ग्रहों का पूजन करना व्यर्थ एवं तथ्यों के विपरीत है। आचार्य जी ने कहा कि 28 नक्षत्र अथर्ववेद में वर्णित है। जिसमें एक सूर्य नक्षत्र भी सम्मिलित है। उन्होंने कहा कि सूर्य ग्रह नहीं अपितु नक्षत्र है, अत: पौराणिकं द्वारा ग्रहों में सूर्य की गणना करना उचित नहीं है। आचार्य जी ने बताया कि वर्ष में 13.5 दिन धरती किसी एक नक्षत्र के सामने रहती है। चन्द्रमा प्रतिदिन एक नक्षत्र के सामने रहता है। आचार्य जी ने बताया कि पृथिवी जब पूर्णिमा को ज्येष्ठ नक्षत्र के सामने होती है तो वह ज्येष्ठ का महीना कहलाता है। पौराणिक लोग ज्येष्ठ नक्षत्र को अशुभ मानते हैं अत: उन्होंने कल्पना कर रखी है कि इस महीने में उत्पन्न होने वाली सन्तानों के परिवारों में नानी, नाना, मामा, मौसी आदि की मृत्यु का कल्पित विधान भी कर रखा है जिसके उपायों के रूप में वह जनता से धन व द्रव्य प्राप्त करते हैं। आर्य समाजी उनके भ्रमजाल में नहीं फंसते और उन्हें कोई ग्रह पीड़ा नहीं पहुंचाते। आचार्य जी ने अपने साथ रेल में बीती एक घटना भी सुनाई जिसमें एक दम्पत्ति ने बताया कि स्वप्न में सास को मिठाई खाता देखने और एक ज्योतिषी को बताने पर उसे अनेक उपाय करने पड़े थे जिसमें उसका धन व समय व्यर्थ गया था।

आचार्य जी ने कहा कि सभी नक्षत्रों, ग्रहों व उपग्रहों का मनुष्यों के जीवन पर एक जैसा प्रभाव पड़ता है। किसी ग्रह का शुभ व अशुभ प्रभाव किसी मनुष्य पर नहीं पड़ता अत: फलित ज्योतिष असत्य है।आचार्य जी ने बताया कि नक्षत्रों में एक नक्षत्र आभिजीत नाम का है जिसका प्रकाश पृथिवी पर 21 वर्ष में पहुंचता है। आचार्य जी ने मनुष्य शरीर में 5 ज्ञान इन्द्रियों, पांच कर्म इन्द्रियों, 10 प्राणों ओर अन्त:करण चतुष्टय के अंगों मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार की चर्चा कर बताया कि यह आत्मा को उसके लक्ष्य तक पहुंचाने के साधन हैं। आचार्य जी ने कहा कि मन संकल्प और विकल्प करता है। सोचता है कि अमुक काम को करूं या न करूं। अहंकार अपने अस्तित्व को बताने

- शेष पृष्ठ 7 पर

.....आचार्य सोमवेद शास्त्री जी ने मनुष्य शरीर में 5 ज्ञान इन्द्रियों, पांच कर्म इन्द्रियों, 10 प्राणों ओर अन्त:करण चतुष्टय के अंगों मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार की चर्चा कर बताया कि यह आत्मा को उसके लक्ष्य तक पहुंचाने के साधन हैं। आचार्य जी ने कहा कि मन संकल्प और विकल्प करता है। सोचता है कि अमुक काम को करूं या न करूं। अहंकार अपने अस्तित्व को बताने वाला है। मनुष्य का चित्त अपने अन्दर कर्मों से उत्पन्न संस्कारों को सुरक्षित रखता है। बुद्धि निर्णय करने का काम करती है और आत्मा के सबसे निकट रहती है। बुद्धि के बाद चित्त, फिर अहंकार और इसके बाद मन होता है। ....

बोध कथा

पार्वती की घोर तपस्या

सुनो, परमेश्वर पत्थर नहीं है। प्यार का उत्तर अवश्य देता है। वह पार्वती थी न! पिता उसके लिए वर खोज रहे थे। तभी नारद ने कहा-''देवि! तेरे लिए तो एक ही वर है। वह भोलानाथ शिवशम्भु। उसके अतिरिक्त तेरा कोई पति नहीं। परन्तु उसे मनाना सरल नहीं। वह समाधि में बैठा है। उसकी समाधि कभी टूटती नहीं।''

पार्वती ने पूछा,''आप कैसे कहते हैं कि उनके अतिरिक्त मेरा कोई पति नहीं? नारद बोले-''जन्म-जन्म से, आदि काल से, वही तेरा पति है। वह अजर और अमर है। तू ही बार-बार नए रूप से, नए तन से उसे प्राप्त करती है। परन्तु इस बार उसे प्राप्त करना सरल नहीं। पिछले जन्म में तू सती थी। पति के अपमान को सहन न करके तूने अपने प्राण त्याग दिये। तभी से वह शिवशंकर गहरी समाधि में बैठा है।''

पार्वती ने कहा-''तब तो मैं उसे प्राप्त करूंगी अवश्य। यदि सहस्र जन्म भी यत्न करन पड़े तो भी मैं करूंगी।''

और तब उसने घोर तप आरम्भ किया, जिससे बड़ा तप आज तक शायद नहीं हुआ। 'शिव' के अतिरिक्त दूसरा नाम लेना उसने छोड़ दिया। उससे काम नहीं बना तो उसने व्रत रखना आरम्भ किया। उससे भी काम नहीं बना तो हिमालय की बर्फ़ीली चोटी पर आसन लगाकर बैठ गई। घर के लोग उसे दिन में एक बार भोजन पहुंचा देते थे। उसे खाकर वह अपने स्वामी का नाम स्मरण करती रहती। इससे भी काम नहीं बना तो उसने खाना छोड़ दिया; केवल पानी पी लेती और बैठी रहती। प्रभु का नाम लेती रहती। इससे भी काम नहीं बना तो उसने पानी पीना भी छोड़ दिया। दिनभर में घास के एक-दो पत्ते खा लेती। इससे भी काम नहीं बना तो उसने पत्ते खाना भी छोड़ दिया। तब उसका नाम अपर्णा हुआ, अर्थात् जिसने 'पर्ण' (पत्ते) भी छोड़ दिये हैं। बर्फ के तूफ़ान उठे, बादल गरजे, बर्फ़ानी आंधियां चली, बिजलियां कड़कीं, परन्तु देवी अपर्णा अपने व्रत से नहीं टली। उसके इस घोर तप को देखकर महादेव का दिल पसीजा, उनकी समाधि टूटी। वे स्वयं उसके पास आये; बोले-''देवि! मैं आ गया हूं।''

यह सारी कहानी वास्तव में आत्मा और परमात्मा के प्यार का अलंकार है। इसका भाव यह है कि आत्मा में जब उस परम प्यारे प्रीतम का प्यार आ जाता है तो परमेश्वर छिपा नहीं रहता, प्रकट होता है। आत्मा के सामने आकर कहता है-देवि! मैं आ गया हूं। अरे, वह प्रभु पत्थरदिल नहीं है, वह तो करुणा का अपार सागर है। वह तो भक्तवत्सल है। भक्त की पुकार सुनता है। उसके प्यार को देखता है। उसका उत्तर भी देता है।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के संयुक्त तत्त्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा

6-7-8 अक्तूबर, 2017 : श्री अम्बिका मन्दिर परिसर, मांडले

महासम्मेलन म्यांमार में ही क्यों?

120 वर्ष बाद होगा आर्य महासम्मेलन म्यांमा: देश-विदेश के आर्यजनों से भारी संख्या में भाग लेने की अपील

.....मांडले में ब्रिटिश शासनकाल में यहां किलानुमा जेल थी जहाँ भारत माता के इन वीर सपूतों को बंदी बनाकर रखा गया था। किले के अवशेष आज भी भारतीय क्रांति की स्मृति ताजा कर देते हैं। प्रसिद्ध आर्य समाजी लाजपत राय समेत कई क्रन्तिकारी यहाँ एकांतवास में रखे गये थे। अकेले और असुविधाओं के बीच, सिर्फ इसलिए कि आर्य समाज भारत देश से गुलामी की बेड़ियाँ काटकर फेंक देने पर अडिग था जिसे अंग्रेजी हकुमत नहीं चाहती थी। हालाँकि बर्मा की गलियों में आर्य समाज के नाम का डंका बज चुका था। क्योंकि आर्य समाज की स्थापना के बाद बर्मा के इसी मांडले शहर में वैदिक धर्म के अनुयायियों महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्तों का आगमन लगभग सन् 1897 में हो गया था। भौगोलिक इतिहास में कभी भारत से जुड़े इस देश में महर्षि दयानन्द, पंडित लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द समेत अन्य समकालीन महात्माओं, संतो के वैदिक उपदेश जब यहाँ के लोगों के कानों में गूंजे तो शीघ्र ही बर्मा के प्रसिद्ध नगर रंगून (यंगून) और मांडले में आर्य समाज मंदिर बन गये।.....

पिछले वर्ष नेपाल अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की सफलता के बाद अगले महासम्मेलन के लिए ब्रह्मदेश का चुना जाना एतिहासिक द्रष्टिकोण में एक गौरव का विषय है। ब्रह्मदेश यानि बर्मा और आज वर्तमान में म्यांमार कहा जाता है। इसी म्यांमार के मध्य में बसने वाले शहर मांडले का आर्य महासम्मेलन के लिए चुना जाना हमारे लिए और भी सौभाग्य का क्षण है। यह स्वतंत्र बर्मा की भूतपूर्व राजधानी, मुख्य व्यापारिक नगर एवं आवागमन का केंद्र है जो इरावदी नदी के बाएँ किनारे पर रंगून से लगभग 350 मील उत्तर दिशा में बसा है, कहते हैं इसे 1856-57 ई. में राजा मिंडान ने इसे बसाया था। शहर में बौद्ध धर्मावालम्बियों के अतिरिक्त हिन्दू, मुसलमान, यहूदी, चीनी एवं अन्य जाति के लोग निवास करते हैं। द्वितीय महायुद्ध के समय 1942 ई. को जापानियों ने इस पर अधिकार कर लिया था। उस समय राजमहल की दीवारों के अतिरिक्त लगभग सभी इमारतें जल गई थीं। तब जापानियों ने इसे ''जलते हुए खंडहरोंवाला नगर'' कहा था हालाँकि आज मांडले से बर्मा की सभी जगहों के लिये स्टीमर सेवाएँ हैं तथा यह रेल एवं सड़क मार्ग द्वारा भी देश के अन्य हिस्सों से जुड़ा है। कभी वैदिक सभ्यता काल के इस ब्रह्मदेश में आज पगोडा शैली में बने भवन व मंदिर बौद्ध स्पुत बौद्ध धर्म से जुड़ी आस्था के केंद्र होने का आसानी से पता चल जाता है।

मांडले का मौसम लगभग भारत जैसा ही है। सर्दियों में कड़ी सर्दी, गर्मियों में आकाश से लेकर धरती तक भट्टी की तरह तपती है तो बरसात में भारी वर्षा भी यहाँ होती है। मंदिरों, प्राकृतिक सुषमा और सौन्दर्य से भरपूर यह शहर अपनी अनेक विशेषताओं के कारण भी जाना जाता है। यहाँ दुनिया की सबसे बड़ी पुस्तक के रूप में एक मंदिर विद्यामान है यानि कि किताब के हर पृष्ठ के रूप में एक मंदिर बना है जिनकी संख्या करीब 500 से ज्यादा है।

इस वर्ष महासम्मेलन की तैयारियों से जुड़े सम्बन्धित कार्यों का जायजा लेने के लिए मेरा मांडले जाना हुआ तो मांडले की धरती पर पांव पड़ते ही भारत के महान गौरव लाला लाजपत राय और बाल गंगाधार तिलक, नेताजी सुभाषचंद्र बोस मन में उभर आये। मांडले में ब्रिटिश शासनकाल में यहां किलानुमा जेल थी जहाँ भारत माता के इन वीर सपूतों को बंदी बनाकर रखा गया था। किले के अवशेष आज भी भारतीय क्रांति की स्मृति ताजा कर देते हैं। प्रसिद्ध आर्य समाजी लाजपत राय समेत कई क्रन्तिकारी यहाँ एकांतवास में रखे गये थे। अकेले और असुविधाओं के बीच, सिर्फ इसलिए कि आर्य समाज भारत देश से गुलामी की बेड़ियाँ काटकर फेंक देने पर अडिग था जिसे अंग्रेजी हकुमत नहीं चाहती थी।

हालाँकि बर्मा की गलियों में आर्य समाज के नाम का डंका बज चुका था। क्योंकि आर्य समाज की स्थापना के बाद बर्मा के इसी मांडले शहर में वैदिक धर्म के अनुयायियों महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्तों का आगमन लगभग सन् 1897 में हो गया था। भौगोलिक इतिहास में कभी भारत से जुड़े इस देश में महर्षि दयानन्द, पंडित लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द समेत अन्य समकालीन महात्माओं, संतो के वैदिक उपदेश जब यहाँ के लोगों के कानों में गूंजे तो शीघ्र ही बर्मा के प्रसिद्ध नगर रंगून(यंगून) और मांडले में आर्य समाज मंदिर बन गये। यह सब कार्य वैदिक धर्म प्रेमी लोग बड़े उत्साह और लगन से करने लगे। वैदिक ध्वज एक फिर ब्रह्मदेश की धरती पर लहरा उठा।

धीरे-धीरे वर्ष बढ़ते गए। अगली सदी के सूर्य उदय के साथ आर्य समाज दिन-दूनी रात-चौगनी प्रगति करने लगा। आर्य समाज की गतिविधियां विद्यालय, अनाथालय, सत्संग संचालित होने लगे प्रत्येक बड़े शहर में जैसे रंगून, माण्डले, लाशियो, मिचिना, मोगोग, जियावाड़ी में स्थापित अनाथालय, स्कूल व सामाजिक संस्थाओं के कार्यो समेत स्त्री समाज की शिक्षा के प्रोत्साहन को लेकर तथा अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आर्य समाज के कार्यो ने लोगों का मन जीत लिया था। लोग अपने साधारण भवनों के साथ जमीन और पैसे समाज के कार्यो के लिए दान स्वरूप भेंट करने लगे।

लेकिन जल्दी ही नई सदी के इस सूर्य को दूसरे विश्व युद्ध का ग्रहण लग गया जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बर्मा में पैदा हुए भारत विरोधी रुझान का शिकार बन गया था। उस समय रंगून (अब यांगून) में आधी आबादी भारतीयों की थी। वे ब्रिटिश प्रशासन में महत्त्वपूर्ण पदों पर थे और इसीलिए बर्मा के नागरिकों के निशाने पर थे। उन्हें नस्लभेदी हमलों का सामना भी करना पड़ा। सन् 1962 में भारतीयों को बर्मा से निकाला जाने लगा और उनकी निजी और धार्मिक सम्पति का राष्ट्रीयकरण किया जाने लगा था। उस समय भारतीय मूल के लगभग तीन लाख लोगों को बर्मा से पलायन करना पड़ा था।

बर्मा में सैनिक शासन के प्रारम्भ के साथ वैदिक साहित्य आदि पर रोक लगा दी गयी। बौद्ध धर्मी बहुसंख्यक इस प्रदेश में नवीन साहित्य के प्रकाशन, बिक्री आदि पर रोक लगा दी गयी। एक किस्म से आर्य समाज के उत्साहित विद्वानों के उत्साह आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं के कार्यों पर चोट जैसा था। लेकिन इसके बावजूद भी हमारा प्रणाम और नमन उन आर्य कार्यकर्ताओं को जिन्होंने फटे, पुराने आर्ष ग्रन्थों से ही वेद की ज्योति के दीपक को बुझने से बचाए रखा। यदि आज वर्तमान में बर्मा के अन्दर आर्य समाज की बात की जाये तो शहरी क्षेत्रों की आर्य समाज मंदिर बेहद भव्य तो ग्रामीण क्षेत्रों की आर्य समाजें वैदिक ज्ञान की लौ को अपने भवनों मे जलाए हुए हैं। आज मुझे लिखते हुए हर्ष हो रहा है कि आर्य महासम्मेलन जैसा गौरवान्वित कार्य को करने में सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में एक बार फिर करीब 120 साल बाद दयानन्द के सिपाही मांडले में अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन आयोजित कर ब्रह्मदेश (म्यांमार) में वैदिक ज्योति को पुनः उसी वेग से जागृत करने का कार्य करेंगे।

-विनय आर्य, उपमन्त्री, सार्वदेशिक सभा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा

अनुमानित यात्रा कार्यक्रम इस प्रकार है

2 से 10 अक्तूबर, म्यांमार, रंगून, इनले लेक, मांडले, पहाड़ी स्थान मेम्यो के आकर्षक स्थानों का भ्रमण। सभी यात्रा, वीजा, हवाई टिकट, बस व्यवस्था, भोजन, श्री स्टार होटल आवास। मेडिकल बीमा 75 वर्ष तक की आयु तक **कुल अनुमानित व्यय 75000/- रुपये** है। (75 वर्ष से अधिक आयु के लिए मेडिकल बीमा पर अतिरिक्त व्यय देय होगा) जो महानुभाव इस सुविधा का लाभ उठाना चाहें वे तुरन्त अपना मूल पासपोर्ट, दो पासपोर्ट फोटो एवं **"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम रु. **15000/-** का बैंक ड्राफ्ट/चैक **"15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001"** के पते पर भेज देवें।

नोट : ★ उपरोक्त यात्रा विवरण एवं व्यय राशि अनुमानित है। ★ विस्तृत कार्यक्रम तैयार होने पर 10% राशि घट-बढ़ सकती है। ★ 10% से अधिक व्यय राशि बढ़ने पर जो श्रद्धालुजन महासम्मेलन में जाने में असमर्थता प्रकट करेंगे उनके द्वारा अग्रिम भेजी गई राशि को वापस लौटा दिया जाएगा। ★ जो यात्रीगण कोलकाता से यात्रा करेंगे उनके लिए व्यय राशि 7500/- रुपये कम रहेगी।

व्यवस्थापक समिति श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री शिव कुमार मदान।

सम्पर्क करें - श्री एस. पी. सिंह (मो. 9540040324)

विस्तृत जानकारी एवं यात्रा विवरण आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा

सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	आर्य अनिल तनेजा
(प्रधान)	(सभा मन्त्री एवं संयोजक)	(कोषाध्यक्ष)

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का निर्वाचन सम्पन्न

श्री अरुण प्रकाश वर्मा प्रधान निर्वाचित

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन दिल्ली आर्य प्रतितिनिधि सभा द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी श्री शिवशंकर गुप्ता जी की अध्यक्षता में में दिनांक 9 जुलाई को सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से **प्रधान - श्री अरुण प्रकाश वर्मा, उपप्रधान** - श्री अशोक सहदेव एवं श्रीमती सुनीता बुग्गा, **मंत्री - डॉ. विजय कुमार दीक्षित, उपमंत्री** -श्री संजय कुमार एवं **कोषाध्यक्ष - श्री दयानन्द यादव जी** को निर्वाचित घोषित किया गया। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई।**

आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 18वाँ आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न

संस्कारवान जीवनसाथी चयन का उत्तम मंच है आर्य परिवार परिचय सम्मेलन

नई दिल्ली, 9 जुलाई। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयाननद सरस्वती ने अपने ग्रंथों में विवाह सम्बंधी वैदिक विचारधारा का बड़े स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया है। आज के ये आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन उन्हीं वैदिक वैवाहिक सिद्धांतों का साकार स्वरूप है। उक्त विचार अट्ठारहवें आर्य परिवार युवक युवती परिचय सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमती प्रकाश कथूरिया प्रधाना प्रांतीय महिला सभा ने व्यक्त किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 18वाँ आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन 9 जुलाई 2017 को आर्यसमाज विकासपुरी बाहरी रिंग रोड, नई दिल्ली में आयोजित परिचय सम्मेलन में उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के इन परिचय सम्मेलनों में वैदिक स्वयंवर प्रथा के तहत ही अर्न्तनिहित है।

इस अवसर पर कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्डा ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि जब कुछ वर्षो पूर्व सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा जब इस प्रकार के परिचय सम्मेलनों के आयोजन का निर्णय लिया गया तो हमने भी इतने वृहद स्तर पर इसकी सफलता की कल्पना नहीं की थी। किन्तु 1 से 18वें सम्मेलन तक पहुंचना आर्यसमाज की एक बड़ी उपलब्धि है। इसके माध्यम से सैंकड़ों की संख्या में आर्य युवक एवं युवतियां परिणय सूत्र में बंध चुके हैं। इससे भावी संतति आर्य संस्कारित होगी और आर्यसमाज का विस्तार होगा।

कार्यक्रम का शुभारम्भ ईश्वर स्तुति प्रार्थना, उपासना के मंत्रोच्चारपूर्वक हुआ। मंच पर उपस्थित अतिथियों श्रीमती प्रकाश कथूरिया, ओ.पी. घई, विनय आर्य, अर्जुनदेव चढ्डा, विक्रम नरूला, एस.पी. सिंह, वेद प्रकाश, वीणा आर्या, शिव कुमार मदान, विभा आर्या, सतपाल भरारा, बलदेव सचदेवा, हर्ष प्रिय आर्य ने दीप प्रज्ज्वलन कर इसका विधिवत् शुभारम्भ किया।

दीप प्रज्ज्वलन के उपरान्त आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली के प्रधान श्री वेदप्रकाश जी ने अतिथियों का परिचय दिया तथा केसरिया पटका पहनाकर आगन्तुकों का स्वागत किया।

सम्मेलन में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलभूषण कुमार संरक्षक आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी ने कहा कि महर्षि दयानंद जी ने समान गुण, कर्म एवं स्वभाव वाले युवक-युवतियों को परस्पर विवाह करने को कहा है। आर्यसमाज के ये परिचय सम्मेलन इसी अवसर को उपलब्ध कराने का कार्य है। जहां एक ही स्थान पर युवक-युवतियों को मनचाहा जीवनसाथी चुनने को मिल सके।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि वर्तमान के युवक-युवतियां बेमेल विवाह के स्थान पर अविवाहित जीवन जीने की ओर बढ़ने लगे हैं जो कि सामाजिक व्यवस्था के लिए घातक है। हमें आर्यसमाज का वैवाहिक मंच मिला है अत: इस प्रकार के परिचय सम्मेलन का आयोजन न केवल सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने अपितु आर्यसमाज के विस्तार में सहायक होगा।

परिचय सम्मेलन के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ करती प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती प्रकाश कथूरिया जी। साथ में हैं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्ढा, श्री विक्रम नरुला, श्री वेद प्रकाशआर्य, श्रीमती विभा आर्या एवं अन्य महानुभाव।

कार्यक्रम में आर्य केन्द्रीय सभा के संरक्षक श्री ओ.पी. घई ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि आर्यसमाज का यह कदम महिलाओं को समानता का अवसर उपलब्ध करवा रहा है। नई पीढ़ी सहअस्तित्व के सिद्धांत पर विश्वास करती है। इसमें स्त्री पुरुष दोनों को समान रूप से जीवनसाथी चुनने की छूट मिलती है।

अपने सम्बोधन में श्री विक्रम नरूला उपप्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य ने कहा कि आर्य संस्कारयुक्त परिवारों के निर्माण की यह अनूठी पहल है। आर्य

- शेष पृष्ठ 7 पर

Veda Prarthana

God Helps Those Whe are Generous and Help Others

- Acharya Gyaneshwarya

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेतत्सत्यमङ्गिरः।।

Yadang dashushe tvamagnay bhadram karishyasi. Tava etat satyamangirah. (*Rig Veda* 1:1:6)

Agne O Superme Light. Our Ultimate Leader, ang You are everybody's Supreme Friend, yad dashushe a person who sacrifices his/her life for the wellbeing of others, tvam You bhadram karishyasi You are always benevolent to such a person. Angirah Dear God, You provide protection to such self-sacrifi-cing persons, etat that is tava Your satyam eternal rule, true principle.

Dear God, in this Veda mantra You are addressed as Agne (also spelled Agnay) because You alone are the Supreme Light and the Ultimate Source of En lightenment. Dear God, You always inspire and guide us in the right path and as such You are our Ultimate Leader and Guide. In this mantra, You are also called Ang (in other mantras Mitra) because You are everybody's Supreme Friend. Please enlighten, inspire and guide us so that we may surrender our life in Your service and be willing to sacrifice for the well being of others. The message from God for everybody in this Veda mantra is that those human beings who give up selfishness and sacrifice their life including mind, body and wealth for the wellbeing of others as well as the nation and the world, are rewarded for such self-sacrifices with protection, fulfillment, fame, joy and bliss; this is God's eternal true principle and commitment to human beings. It is Gods's natural justice to give happiness and joy to generous self-sacrificing persons; and God punishes those persons who are selfish, cruel, unjust, liars, and/or deceptive and their life is full of worries, fear, unhappiness and misery.

In contrast to what is stated above, it often appears that principled, generous and virtuous persons have material deprivation and/or are suffering, while on the other hand selfish, dishonest and deceptive this, a common person often has doubts about the value and sanctity of truth, honesty and virtue as well as he/she considers what is stated in the Vedas about God being Just as invalid or a lie and a figment of imagination. On many occasions, even good and honest persons when they encounter difficulties in their personal lives due to the prevailing corruption and dishonesty in the society, lose their integrity, ideal of honesty, courage and start to emulate selfish, dishonest and deceptive persons. Such persons have lost their faith in truth, virtue, real justice, rebirth, dharma principles, Vedas and their teachings and most importantly in God.

The reasons for the perception that 'virtuous persons often appear to be suffering' are many. First of all, people often consider that because they practice one or more of the following rituals: pray to God, read scriptures, sing spiritual songs, listen to sermons, and meditate; they automatically desserve God's generous rewards. The truth, however, is that God expects deeds/actions and not rituals alone. God expects His true devotees to live virtuously, gain knowledge and wisdom, become both physically and mentally strong, earn wealth by fair means, and with these capabilities have the courage to fight various vices and injustices in the society even at the cost of their lives.

Secondly, even when many persons consider that they have surrendered to God and are following God's teachings completely (100%), in actuality they are often following only 10-20% of the teachings (especially those which are convenient to follow). They expect results for their beliefs that are presumably based on their following God 100%, while God gives them the just reward in proportion to their actual effort of only 10-20%. For example a very wealthy person may donate a fraction of his/her wealth to a worthwhile charity, where as rest of his deeds/actions are not virtuous and in fact he/she cheats others in business. The person, howerver, expects all types of rewards such as contentment, fulfillment, happiness, fame etc, as a just reward for his/her deed of charity. God will give reward to such person for his/her charity but even a more severe punishment for being dishonest and a cheater.

Total surrender to God and self-sacrifice for the wellbeing of others, though very rewarding, is a difficult endeavor in life for most persons. A person who makes such a commitment, is advised to seek guidance from a rue guru (if available) on how to dedicate oneself to total surrender to God and then put in his/her total effort, energy, sacrifice in accomplishing that goal. The more one puts his/her effort more he/she start to see and experience fulfillment, joy and blisss in life.

Lastly, fighting for virtuous causes alone as individuals usually will have only limited results but if virtuous people Join togeter to form a strong union, they will be able to uproot even long established vices and evils in the society. Such virtuous people should meet to gether and properly plan both for the short and long term success and stay steadfast together to implement the goals even when there are setbacks. Because, when virtuous people are not organized together, dishonest and manipulative persons including bad politicians are able to deceive and exploit common people by using false promises or false accusations against virtuous people. Many such crooed persons are clever with their words and may be even good speakers but their intentions are selfish and exploitative of others. Virtuous persons when working together will usually succeed in exposing the truth and finally uprooting the power of crooked persons.

Therefore, O learned virtuous persons! Never have doubt on the messages of Veda mantras. God is our Supreme Friend and Wellwisher. Persons who follow God's message and selflessly help others for their success, God in the long haul always rewards such self-sacrificing persons with protection, fulfillment, joy and bliss. May we always follow the teahings of Vedas and carefuly fulfill our personal, family, societal and national duties and obligations. Dear God, it is our humble prayer that You may fill our mind (antahkaran) with deep faith in and devotion to You. May we always follow Your message and guidance as well as sincerely and selflessly serve others. Dear God, may we succeed in our complete surrender to You and one day attain Your realization (our soul be always consciously aware of You) and bliss in life. (For benefits of virtuous conduct in life also see mantra#9,19,24,25,26, and 29)

To be continued

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 27

गतांक से आगे....

छन्द शब्द मूल रूप से छन्दस् अथवा छन्दः है । इसके शाब्दिक अर्थ दो हैं 'आच्छादित कर देने वाला' और 'आनन्द देने वाला'। लय और ताल से युक्त ध्वनि मनुष्य के हृदय पर प्रभाव डाल कर उसे एक विषय में स्थिर कर देती है और मनुष्य उससे प्राप्त आनन्द में डूब जाता है। यही कारण है कि लय और ताल वाली रचना छन्द कहलाती है। इसका दूसरा नाम वृत्त है। वृत्त का अर्थ है प्रभावशाली रचना। वृत्त भी छन्द को इसलिए कहते हैं, क्योंकि अर्थ जाने बिना भी सुनने वाला इसकी स्वर-लहरी से प्रभावित हो जाता है। यही कारण है कि सभी वेद छन्द-रचना में ही संसार में प्रकट हुए थे ।

छन्दों के भेदः छन्द मुख्यतः दो प्रकार के हैं: 1) मात्रिक और 2) वार्णिक

छन्द रचना

1) **मात्रिक छन्दः** मात्रिक छन्दों में मात्राओं की गिनती की जाती है ।

2) **वार्णिक छन्दों** में वर्णों की संख्या निश्चित होती है और इनमें लघु और दीर्घ का क्रम भी निश्चित होता है, जबकि मात्रिक छन्दों में इस क्रम का होना अनिवार्य नहीं है । मात्रा और वर्ण किसे कहते हैं, इन्हें समझिए:

मात्राः ह्रस्व स्वर जैसे 'अ' की एक मात्रा और दीर्घस्वर की दो मात्राएँ मानी जाती है । यदि ह्रस्व स्वर के बाद संयुक्त वर्ण, अनुस्वार अथवा विसर्ग हो तब ह्रस्व स्वर की दो मात्राएँ मानी जाती है । पाद का अन्तिम ह्रस्व स्वर आवश्यकता पडने पर गुरु मान लिया जाता है ।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

बाबू काली प्रसन्न चटर्जी

आप लाहौर से निकलने वाले प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक के सहायक सम्पादक थे। बैठकर प्रवचन करते थे। खड़े होकर भी आप व्याख्यान दिया करते थे। घण्टों बोल सकते थे। प्रवचन के लिए तैयारी की आवश्यकता न थी, बस माँग होनी चाहिए उनका व्याख्यान तैयार समझो।

वे कहानियाँ तथा चुटुकुले घड़ने में सुदक्ष थे। उनके मित्र उनसे नये-नये चुटुकुले सुनने के लिए उन्हें घेरे रहते थे।

वेद, शास्त्र, उपनिषद् का अच्छा स्वाध्याय था। हिन्दी अंग्रेजी, पंजाबी सबमें धाराप्रवाह बोल सकते थे। बंगला पर तो अधिकार था ही। उनके व्याख्यान सुनने के लिए लोग बहुत उत्सुक रहते थे।

एक व्याख्यान में उन्होंने एक रोचक बात कही। उन दिनों पंजाब के स्कूलों में कलकत्ता के. पी. घोष का गणित, एलजबरा तथा रेखागणित पढ़ाया जाता था। जब पी. घोष मरा तो आपने अपने एक भाषण में कहा कि यदि पी. घोष कुछ पूर्व मर जाता तो वह (काली प्रसन्न चैटर्जी) भी मैट्रिक पास हो जाते। उनके इसी व्याख्यान से लोगों को पता चला कि काली प्रसन्न जी दसवीं पास नहीं। गणित न आने के कारण वे मैट्रिक में रह गये।

स्कूली शिक्षा इतनी स्वल्प होने पर भी एक पत्रकार के रूप में आपके लेखों की धूम थी। आपकी पढ़े-लिखों में धाक थी। एक समाजसेवी के रूप में आपकी कीर्ति थी। आर्यसमाज में आप बहुत प्रतिष्ठित समझे जाते थे।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

पृष्ठ 5 का शेष

विचारधारा युक्त युवक-युवतियों के आपस में विवाह करने से आर्य संस्कारों का पीढ़ीगत हस्तांतरण सहज ढंग से होगा जिससे आर्यसमाज एवं आर्य विचारधारा को बढ़ावा मिलेगा।

इस अवसर पर श्री शिवकुमार मदान, उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि दहेज, बेमेल विवाह जैसी अनेकों समस्याओं का निराकरण इस प्रकार के सम्मेलनों के माध्यम से हो जाता है।

राष्ट्रीय संयोजक अर्जुन देव चढ्डा व दिल्ली क्षेत्र के संयोजक एस.पी. सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि इस सम्मेलन में जिन युवक युवतियों का पंजीकरण किया गया था उनका फोटोयुक्त बायोडाटा विवरणिका पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। ये पुस्तिका कार्यक्रम स्थल पर सभी को नि:शुल्क वितरित की गई। उन्होंने बताया कि प्रात:काल से ही बड़ी संख्या में युवक- युवतियों एवं अभिभावकों का कार्यक्रम स्थल पर आना प्रारम्भ हो गया था। देश के विभिन्न हिस्सों से आकर आर्य युवक-युवतियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

तत्काल पंजीयन, बैज वितरण काउण्टर की पूरी जिम्मेदारी:- वीणा आर्या, विभा आर्या, संयोजिका महिला सुश्री हविषा आर्या, पर्णिका आर्या, ऊषा कुकरेजा, किरण चोपड़ा, सपना तथा दिल्ली सभा के अशोक आर्य, मनोज नेगी ने संभाल रखी थी।

आत्मविश्वास के साथ दिया परिचय:- सम्मेलन में युवक एवं युवतियों ने मंच पर आकर आत्मविश्वास के साथ परिचय दिया तथा कुछ ने उन्हें कैसा जीवनसाथी चाहिए इस बारे में भी अपनी इच्छा जाहिर की। कुछ अभिभावकों ने अपने पुत्र-पुत्रियों का बायोडेटा मंच पर आकर सबके सामने बताया।

मेल मिलाप समिति:- रिश्तों की वार्ता को आगे बढ़ाने सहयोग के लिए बुजुर्ग सदस्यों की एक मेल मिलाप समिति बनाई गई। समिति ने आपसी मेल मिलाप करने में पूर्ण सहयोग दिया। जिससे कई रिश्तों की बात आगे चली।

दिल्ली से बाहर से आने वाले कुछ युवक-युवतियों एवं उनके अभिभावक एक दिन पूर्व ही पहुंच गये थे। उनके ठहरने की व्यवस्था आर्य समाज विकासपुरी नई दिल्ली द्वारा की गई। सम्मेलन में कार्यक्रम स्थल पर प्रात: चाय-नाश्ता तथा दोपहर के भोजन की आर्यसमाज विकासपुरी द्वारा व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चढ्डा, श्री वेद प्रकाश, श्रीमती विभा आर्या, श्रीमती वीणा आर्या, श्री एस.पी. सिंह, तथा श्री सतीश चढ्डा, हर्ष प्रिय आर्य एवं कोटा से पधारे रामचरण आर्य द्वारा किया गया।

इस अवसर पर आर्यसमाज विकास पुरी के प्रधान वेद प्रकाश ने कहा कि हमें इस बात की प्रसन्नता है कि यह कार्यक्रम आर्यसमाज विकासपुरी में सम्पन्न हुआ। दिल्ली सभा ने हमें इस दायित्व के निर्वहन योग्य समझा। आज का सारा दिन उत्सव जैसे माहौल में निकला। इसके लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को धन्यवाद।

कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी के उपमंत्री श्री विजय कुमार, महिला प्रधाना श्रीमती ऊषा कुकरेजा, महिला समाज संरक्षिका श्रीमती चंचल मग्गो , प्रचार मंत्री श्री सूर्यकांत मिश्रा, उपप्रधान श्री श्री मोहन भटनागर का पूरा सहयोग रहा। विकासपुरी आर्यसमाज के प्रचार मंत्री सूर्यकांत मिश्र ने आगन्तुक अतिथियों, विद्वानों, युवक-युवतियों एवं उनके अभिभावकों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

-अर्जुन देव चढ्डा, राष्ट्रीय संयोजक

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज गोविन्दपुरी, दिल्ली

प्रधान - श्री सोम देव मल्होत्रा
मन्त्री - श्री सुरेश चन्द गुप्ता
कोषाध्यक्ष - श्री सत्येन्द्र मिश्रा

आर्य समाज गोमती नगर, लखनऊ

प्रधान - श्रीमती सुमन पाण्डेय
मन्त्री - श्रीमती शैलजा आर्य
कोषाध्यक्ष - श्रीमती गीता मिश्रा

पृष्ठ 3 का शेष

वाला है। मनुष्य का चित्त अपने अन्दर कर्मों से उत्पन्न संस्कारों को सुरक्षित रखता है। बुद्धि निर्णय करने का काम करती है और आत्मा के सबसे निकट रहती है। बुद्धि के बाद चित्त, फिर अहंकार और इसके बाद मन होता है। योग-क्षेम की चर्चा कर आचार्य जी ने बताया कि योग अप्राप्त को प्राप्त करने को कहते हैं। जबकि क्षेम प्राप्त हुए की रक्षा करने को कहते हैं। ईश्वर हमारी बुद्धि, वाणी और कर्मों का रक्षक है। हितकारी कर्मों का फल सुख व अहितकारी कर्मों का फल दु:ख के रूप में मिलता है। उन्होंने कहा कि यश बड़ी तपस्या के बाद मिलता है। शत्रु भी यशस्वी मनुष्यों की प्रशंसा किया करते हैं। आचार्य जी ने वाराणसी के एक पौराणिक संस्कृतज्ञ विद्वान की चर्चा की जो सत्त वर्षों तक मौन व्रत धाराण कर रहे ओर उसके बाद उनकी जिह्वा आदि अवयवों ने बोलने का काम ही बन्द कर दिया। तब वह चाह कर भी बोल नहीं पाते थे। अपने साथ उनसे हुए संवाद पर आचार्य जी ने प्रकाश डाला। आचार्य जी ने कहा कि वेदों का स्वाध्याय करना और उसे आचरण में लाकर प्रचार करना वाणी का तप है। ओ३म् का जप करना भी उन्होंने तप बताया। तप वह साधन है जिससे मनुष्य का जीवन चमक उठता है। आचार्य जी ने बताया कि मनुष्य को ब्रह्मवर्चसता ईश्वर के पास बैठकर साधना करने से प्राप्त होती है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी श्री सुखबीर सिंहं आर्य जी ने आचार्य जी का धन्यवाद किया व शान्ति पाठ के साथ स्वाध्याय शिविर का पूर्वाह्न सत्र सम्पन्न हुआ।

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

प्रथम पृष्ठ का शेष

पाकिस्तान परस्ती राज्य की एक गंभीर समस्या है। राज्य की खस्ताहाली में जो कमी रह गयी थी उसे मीरवाइज उमर फारूक, गिलानी और यासीन मलिक जैसे कट्टरपंथी नेताओं ने पूरा कर दिया है। हालाँकि राज्य में जिस तरह सेना और पुलिस द्वारा आतंकियों का खात्मा करके आतंकवाद पर नकेल कसी जा रही है उसके लिए नि:संदेह ही सेना और पुलिस की सराहना होनी चाहिए। जहां एक तरफ कश्मीर से आ रही ऐसी खबरें एक आम भारतीय को सुकून देती हैं तो वहीं उसका दिल तब बैठ जाता है जब वह किसी आतंकी के जनाजे में जिंदाबाद के नारों के बाद अमरनाथ यात्रियों पर हमला बोल दिया जाता है।

कश्मीर में तहरीक ए आजादी का नारा देकर अलगाववादी खुलेआम जहर बाँट रहे हैं। मस्जिदों का उपयोग प्रार्थना इबादत के बजाय राजनीति और अलगाव के लिए हो रहा है। जिसे सीधे तौर पर मजहब से जोड़ दिया गया है। बड़ा सवाल यही उभरता है कि आखिर कश्मीर को आजादी दिलाकर कहां ले जाएंगे? यह सवाल किसी एक कश्मीरी से नहीं बल्कि भारत में राजनैतिक और बौद्धिक रूप से इनका समर्थन करने वाले सब लोगों से है। यदि कश्मीरी समुदाय कुछ पल को मजहबी भावनाएं किसी संदूक में रखकर ये सोचे कि मजहब के नाम पर बनने वाले पाकिस्तान से किसे लाभ हुआ? क्या पाकिस्तान के बनने से खुद पाकिस्तान को लाभ हुआ? यानी अगर वह इलाका आज भारत के अधीन होता तो क्या वहां हालात आज से बदतर होते या बेहतर होते? सवाल घूमकर फिरकर वहीं आ जाता है कि मजहब के नाम पर पाकिस्तान बनाने वालों के सिवा किसे लाभ हुआ? आज जो कश्मीरी समुदाय आजादी के लिए कट्टरपंथ और अलगाववाद का हिस्सा बन रहा है, वह जरूर सोचें क्या पाकिस्तान बनने से मुसलमानों को कोई फायदा हुआ?

जिन्ना ने पाकिस्तान मांगते हुए कहा था कि हिन्दू मेरी इबादत में खलल डालेगा इसलिए मुझे पाकिस्तान चाहिए। क्या हुआ आज उसकी इबादत का? पाकिस्तान का बच्चा-बच्चा या कहो 20 करोड़ की आबादी संगीनों के साये में अपनी इबादत करते नजर आते हैं जबकि भारत में रह रहे मुस्लिम सड़कों तक पर आराम से सुरक्षित नमाज अदा करते दिख जायेंगे। लेकिन यहाँ का बहुसंख्यक समुदाय अपनी आस्था-उपासना के लिए सरकार का मुंह देख रहा है कि कब सुरक्षा का आश्वासन मिले और बिना विघ्न अपनी पूजा अर्चना कर पाएं। आखिर क्यों देश के टैक्स की बड़ी रकम से हजयात्रा पर सब्सिडी मिल रही है और अमरनाथ यात्रा पर गोली? ऐसे हमलों की निन्दा तो हम वर्षों से सुनते आ रहे हैं पर अब समय आ गया है कि इसके खिलाफ सीधी कार्यवाही की जाये!

- राजीव चौधरी

पू. दिल्ली क्षेत्रीय गोष्ठी : समय परिवर्तन सूचना

आर्यजनों सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली सभा द्वारा आर्यसमाज सूरजमल विहार में होने वाली पूर्वी दिल्ली की क्षेत्रीय गोष्ठी 16 जुलाई, 2017 के आयोजन समय में परिवर्तन किया गया है। अब यह गोष्ठी सायं 3:15 बजे के स्थान पर प्रात: 10:15 बजे से सायं दोपहर 2 बजे तक सम्पन्न होगी। सभी आर्यजनों के लिए प्रात:कालीन नाश्ते एवं दोपहर के भोजन की समुचित व्यवस्था की गई है।

- महामन्त्री

विद्यार्थी अवार्ड दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान, नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद के तत्वावधान में 15 जुलाई को महात्मा के. एल. महता दयानन्द महिला महाविद्यालय में 'विद्यार्थी अवार्ड दिवस'' कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती सीमा त्रिखा मुख्य संसदीय सचिव एवं अध्यक्षता श्रीमती सुमन बाला महापौर ने की। श्रीमती सीमा त्रिखा ने अपने कर कमलों से विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया गया।

- मन्त्री

शोक समाचार

श्री योगेश कुमार आर्य को भ्रात शोक

आर्यसमाज बिडला लाइन्स (कमला नगर) के प्रधान श्री योगेश कुमार आर्य जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री विजय कुमार गुप्ता जी का दिनांक 10 जुलाई, 2017 को निधन हो गया। वे लगभग 76 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से निगम बोध घाट पर आचार्य कुंवरपाल शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया। श्री विजय कुमार जी आर्यसमाज बिडला लाइन्स के सदस्य थे। वे अपने पीछे अपनी धमपत्नी श्रीमती सरोज गुप्ता एवं 3 पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 13 जुलाई, 2017 को हनुमान वाटिका, निकट आर्यसमाज शक्ति नगर दिल्ली-7 में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अन्य अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।

सोमवार 10 जुलाई, 2017 से रविवार 16 जुलाई, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 13/14 जुलाई, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12 जुलाई, 2017

प्रतिष्ठा में,

॥ ओ३म् ॥

आधुनिक भारत
ले चलें शिखर की ओर

शनिवार
22 जुलाई
2017
तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली
प्रातः 9 से 1 बजे

अध्यक्षता
महाशय धर्मपाल जी
चेयरमैन, MDH

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में
आर्य विद्या परिषद्, दिल्ली
के अन्तर्गत समस्त
आर्य शिक्षण संस्थाओं का
सामूहिक विचारोत्सव

एवं विशिष्ट सांस्कृतिक प्रस्तुति

दिल्ली की सभी आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं एवं आर्य विद्यालयों के अधिकारीगण, समस्त सदस्यों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों सहित सादर सपरिवार आमन्त्रित हैं

संयोजक समिति

अरुण प्रकाश वर्मा, शिवशंकर गुप्ता, सुरेन्द्र आर्य, सुरेश चन्द्र गुप्ता, सुखबीर सिंह आर्य, वीरेन्द्र सरदाना, अरविन्द नागपाल, ए. के. धवन, योगेश आर्य, गोविन्दराम अग्रवाल, आर. के. वढ़ेरा, कर्नल रवीन्द्र कुमार वर्मा, कृष्णचन्द्र आर्य, पुषोत्तम लाल गुप्ता, राम प्रकाश छाबड़ा, प्रवीण भाटिया, सुशील आर्य, नितिञ्जय चौधरी, अमरनाथ गोगिया, नरेन्द्र हुड्डा, रतन कुमार लूथरा, जितेन्द्र डाबर, रमेश भसीन, रवि गुप्ता, राजेन्द्र मदान, नरेन्द्र आर्य सुमन, महेन्द्र पाल मनचन्दा, गोपाल आर्य, विजय कुमार भाटिया, एच.एन. मिथरानी, जय गोपाल मित्तल, वी. पी. चुघ, अमृत पॉल, विकास वर्मा, संजय कुमार, अशोक सहदेव, रवीन्द्र बत्रा, भीमसेन कामरा, कृपाल सिंह, सोमदेव मल्होत्रा, जगदीश आर्य, नरेन्द्र नारंग, विजयकृष्ण लखनपाल, श्रीबाला चौधरी, सुरेश टंडन, वीणा आर्या, तृप्ता आर्या, उमा शशि दुर्गा, आदित्य अरोड़ा, उमेश आर्य

निवेदक

धर्मपाल आर्य	विद्यामित्र ठुकराल	सुरेन्द्र कुमार रैली	विनय आर्य	सत्यानंद आर्य	ओम प्रकाश आर्य	शिवकुमार मदान	मृदुला चौहान
प्रधान	कोषाध्यक्ष	प्रस्तोता	महामन्त्री	संयोजक	उपप्रधान	उपप्रधान	उपप्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.)
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 सम्पर्क सूत्र : 011-23360150, 23365959 e-mail : aryasabha@yahoo.comwebsite : thearyasamaj.org
9540045898 arya.samaj

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह